IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# प्राचीन भारत में मौर्य साम्राज्य का संछिप्त राजनीतिक अध्ययन

Name of 1st Author- MUKTANAND
Designation of 1st Author- PhD (Political Science)
Name of Department of 1st Author- Ph D Department, M.U BODH GAYA, BIHAR
Name of organization of 1st Author- M.U BODH GAYA, BIHAR
City- NAWADA, BIHAR, Country- INDIA

*Abstract:* भारत का एक बहुत बड़ा इतिहास है जिसने विभिन्न राजवंशों के उत्थान और पतन को देखा है। प्राचीन काल के दौरान भारत पर कई राजवंशों का शासन था और उनमें से सबसे महत्वपूर्ण महाजनपद, नंदा राजवंश, मौर्य राजवंश, पंड्या राजवंश, चेरा राजवंश, चोल राजवंश, पल्लव वंश, चौलाक्य वंश आदि सबसे लंबे समय तक शासन करते रहे। भारत की धरती पर मौर्य साम्राज्य (320-185 ई.पू.) पहला प्रमुख ऐतिहासिक भारतीय साम्राज्य था, और निश्चित रूप से एक भारतीय राजवंश द्वारा बनाया गया सबसे बड़ा साम्राज्य उत्तरी भारत में राज्य के एकत्रीकरण के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ, जिसे आज के बिहार राज्य से जाना जाता है, मगध राज्य को गंगा के मैदानी इलाके में प्रभावशाली बना दिया था इस वंश की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी।

## I. INTRODUCTION

### मौर्य वंश शासकों का योगदान और उपलब्धियां

सिकंदर का आक्रमण 326 ईसा पूर्व में धनानंद के शासनकाल के दौरान उत्तर-पश्चिम भारत में हुआ थे। चंद्रगुप्त मौर्य ने अंतिम नंद शासक धनानद को पराजित कर शासन किया और कौटिल्य की मदद से 322 ईसा पूर्व में पाटलिपुत्र पर कब्जा कर लिया। 306 ईसा पूर्व में सेल्यूकस निकेटर को हराया तथा मेगस्थनीज (ग्रीक राजदूत) उनके दरबार में आए थे । बिन्दुसार को यूनानियों के रूप में जाना जाता है जो अमित्रोचेतस (संस्कृत शब्द अमृताघाट से लिया गया है, यानी दुश्मन के कातिलों) अशोक वेल अपने प्रशासन और धम्म के सिद्धांत के लिए जाना जाता है।
शांति और अधिकार बनाए रखने के लिए एक बड़ी और शक्तिशाली सेना बनाए रखी, अशोक ने एशिया और यूरोप के राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों और प्रायोजित बौद्ध मिशनों का विस्तार किया। महेंद्र, तिवारा / तिवाला (केवल एक शिलालेख में उल्लिखित), कुणाल और तालुका अशोक के पुत्रों में प्रमुख थे। उनकी दो बेटियाँ संघमित्रा और चारुमती जानी जाती थीं।

### मौर्य शासकों के नाम व शासन कल –

1. चन्द्रगुप्त मौर्य- 322 ई० पू० से 298 ई० पू०
2. बिन्दुसार- 298 ई० पू० से 272 ई० पू०
3. सम्राट अशोक- 273 ई० पू० - 232 ई० पू०
4. कुणाल - 232 ई० पू० - 232 ई० पू०
5. दशरथ मौर्य- 232 ई० पू० - 224 ई० पू०
6. सम्प्रति- 224 ई० पू० – 215 ई० पू०
7. शालिशुक- 215 ई० पू० -202 ई० पू०
8. देववर्मन- 202 ई० पू० -195 ई० पू०
9. शतधन्नवा- 195 ई० पू० -187 ई० पू०
10. वृहद्रथ- 187 ई० पू० से 185 ई० पू०

**आर्थिक स्थिति:**
राज्य की आर्थिक गतिविधियों को विनियमित करने के लिए मौर्य साम्राज्य द्वारा नियुक्त 27 अधीक्षक (आद्याक्ष) थे। इसमें व्यापार और वाणिज्य, कृषि, वजन और उपाय, खनन, बुनाई और कताई शामिल थे।

**कृषि**
कृषकों के लाभ के लिए राज्य द्वारा सिंचाई की सुविधा प्रदान की गई। कृषि के लिए उपयुक्त भूमि की माप की गई और चैनलों का निरीक्षण किया गया जिसके माध्यम से पानी वितरित किया गया था।

**कराधान**
करों को कारीगरों, व्यापारियों और किसानों से एकत्र किया गया था। इसके भंडारण के बजाय कर के मूल्यांकन पर जोर दिया गया था, उच्चतम अधिकारी जो कर के मूल्यांकन के प्रभारी थे, उन्हें समहर्ता के रूप में जाना जाता था, जबकि राजकीय कोषागार और भंडार गृह के मुख्य संरक्षक को सानिध्य कहा जाता था। करों के रूप में अच्छी तरह से नकद में एकत्र किए गए थे।

**मुद्रा**
पंच ने पहाड़ी, अर्धचंद्रा और मोर के प्रतीक वाले चांदी के सिक्कों को मौर्य साम्राज्य की शाही मुद्रा के रूप में चिह्नित किया।

**यातायात-साधन**
शाही सड़क पाटलिपुत्र से वैशाली और चंपारण होते हुए नेपाल तक जाती थी। हिमालय की तलहटी में एक और सड़क वैशाली से चंपारण से कासी, कपिलवस्तु और पूरी तरह पेशावर तक पहुँचती है। अन्य सड़कें थीं जो साम्राज्य के भीतर रणनीतिक स्थानों से जुड़ी थीं। इससे परिवहन सुगम हो गया। नदियों का उपयोग संचार के मार्गों के रूप में भी किया जाता था।

**सामाजिक जीवन**
मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में उल्लेख किया है कि भारत में सात जातियाँ मौजूद थीं जिनमें दर्शनशास्त्री, सैनिक, ब्राह्मण, शिल्पकार, चरवाहे, किसान, मजिस्ट्रेट शामिल थे। मेगस्थनीज ने जन्म के बजाय कब्जे पर अपना अनुमान लगाया। बहुविवाह शाही वर्गों में प्रचलित था, महिलाएं स्त्रिधना की हकदार थीं, जिसमें दुल्हन उपहार भी शामिल थी। दासता को लागू नहीं किया गया था, लोग अपनी मजबूरी से बाहर निकलकर "दास" का काम करते थे।

**कला और वास्तुकला**
बुद्ध के अवशेषों को संरक्षित करने के लिए मौर्य साम्राज्य में स्तूपों का निर्माण किया गया था। सबसे प्रसिद्ध स्तूप भरहुत और सांची में हैं। चंद्रगुप्त मौर्य का शाही महल (कुम्हरार, पटना में खोजा गया), अशोक स्तंभ, सारनाथ में चार शेर की राजधानी जिसे बाद में राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया और सांची मौर्यकालीन कला और वास्तुकला के बेहतरीन नमूने हैं। मौर्य काल के कारीगरों ने भिक्षुओं के रहने की जगह के रूप में चट्टानों से गुफाओं को तराशा।

**मौर्य साम्राज्य: प्रशासन**
प्रशासनिक संरचना मन्त्रीपरिषद द्वारा सहायता प्राप्त राजा, जिनके सदस्यों में मन्त्रीपरिषद आद्याक्ष और उनके नीचे शामिल थे, युवराज: मुकुट राजकुमार, पुरोहित: मुख्य पुजारी, सेनापति: सेनापति, अमात्य: सिविल सेवक और कुछ अन्य मंत्री।
मौर्य साम्राज्य पाटलिपुत्र में शाही राजधानी के साथ चार प्रांतों में विभाजित था। अशोकन एडिकट्स से, चार प्रांतीय राजधानियों का नाम तोसली (पूर्व में), पश्चिम में उज्जैन, सुवर्णगिरि (दक्षिण में) और तक्षशिला (उत्तर में) थे। संरचना के केंद्र में राजा था जो कानूनों को लागू करने की शक्ति रखता था। जब वर्ण और आश्रमों (जीवन के चरणों) पर आधारित सामाजिक व्यवस्था नष्ट हो जाती है तो कौटिल्य राजा को धर्म का प्रचार करने की सलाह देता है।

मौर्य साम्राज्य पाटलिपुत्र में शाही राजधानी के साथ चार प्रांतों में विभाजित था। अशोकन की शिक्षाओं से, चार प्रांतीय राजधानियों का नाम तोसली (पूर्व में), पश्चिम में उज्जैन, सुवर्णगिरि (दक्षिण में) और तक्षशिला (उत्तर में) थे। मेगस्थनीज के अनुसार, साम्राज्य ने 600,000 पैदल सेना, 30,000 घुड़सवार सेना, और 9,000 युद्ध हाथियों की सेना का अभ्यास किया। आंतरिक और बाहरी सुरक्षा के उद्देश्य के लिए, वहाँ एक विशाल जासूसी प्रणाली थी, जो अधिकारियों पर निगरानी रखने के लिए थी और संदेशवाहक फ्रॉस्ट के पास गए थे। राजाओं ने अधिकारियों को चरवाहों, किसानों, व्यापारियों और कारीगरों आदि से कर वसूलने के लिए नियुक्त किया। राजा प्रशासनिक अधिरचना का केंद्र था और राजा मंत्रियों और उच्च अधिकारियों का चयन करता था।
विद्वानों का सुझाव है कि मौर्य साम्राज्य को महत्वपूर्ण अधिकारियों के साथ विभिन्न विभागों में विभाजित किया गया था:

**राजस्व विभाग**: - महत्वपूर्ण अधिकारी: सानिध्य: मुख्य कोषागार, समहर्ता: राजस्व के कलेक्टर सामान्य।

**सैन्य विभाग**: मेगस्थनीज ने इनमें से सैन्य गतिविधि के समन्वय के लिए छह उपसमिति के साथ एक समिति का उल्लेख किया है, एक ने नौसेना, दूसरा प्रबंधित परिवहन और प्रावधानों की देखभाल की, और तीसरा पैदल सैनिकों के लिए जिम्मेदार था, घोड़ों के लिए चौथा, रथों के लिए पांचवां और हाथियों के लिए छठा।

**जासूसी विभाग**: महामात्यपसार ने गुप्तपुरुषों को नियंत्रित किया (गुप्त एजेंट)

**पुलिस विभाग**: जेल को बंधंगारा के नाम से जाना जाता था और यह तालाक से अलग था जिसे चरक कहा जाता था। सभी प्रमुख केंद्रों में पुलिस मुख्यालय थे।

**प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन**: महत्वपूर्ण अधिकारी: प्रदेशिका: आधुनिक जिला मजिस्ट्रेट, चरणिका: कर संग्रह अधिकारी, दुर्गापाल: दुर्ग के गवर्नर, अंतापाला: सीमांत के राज्यपाल, अक्षतताला, महालेखाकार, लिपिकारस: लिपिक: गोप, लेखाकार आदि के लिए उत्तरदायी।

**नगरपालिका प्रशासन**: महत्वपूर्ण अधिकारी: नागरका: नगर प्रशासन के प्रभारी, सीता-अधिशाक्ष: कृषि पर्यवेक्षक, सम्यग्-अभ्यक्ष: बाजार के अधीक्षक, नवधनाक्ष: जलपोतों के अधीक्षक, सुलक्षणा: टोलों के कलेक्टर, लोहयक्ष: लोहे के अधीक्षक। खानों और पुतवध्याक्ष: अधीक्षक वजन और उपाय आदि
मेगस्थनीज ने छह समितियों का उल्लेख किया, जिनमें से पाँचों को पाटलिपुत्र के प्रशासन की देखभाल करनी थी। उद्योग, विदेशी, जन्म और मृत्यु का पंजीकरण, व्यापार, निर्माण और माल की बिक्री और बिक्री कर का संग्रह प्रशासन के नियंत्रण में थे।

## मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण :

232 ईसा पूर्व में अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य का पतन शुरू हुआ। अंतिम राजा बृहद्रथ की हत्या 185 ईसा पूर्व -183 ईसा पूर्व में उनके सामान्य पुष्यमित्र शुंग ने की थी जो ब्राह्मण थे। मौर्य राजवंश का पतन अशोक की मृत्यु के बाद तेजी से हुआ। इसका एक स्पष्ट कारण कमजोर राजाओं का उत्तराधिकार था। एक और तात्कालिक कारण साम्राज्य का दो भागो में विभाजन था। यदि विभाजन नहीं हुआ होता, तो मौर्यों को अपनी पिछली शक्ति के कुछ अंशों को फिर से स्थापित करने का मौका देते हुए ग्रीक आक्रमणों को वापस आयोजित किया जा सकता था।
इतिहासकारो द्वारा कुछ महत्वपूर्ण कारन अध्यन किया गया जिनमे कुछ महत्वपूर्ण कारन है-

### अशोक की धार्मिक नीति

अशोक की धार्मिक नीति ने उसके साम्राज्य के ब्राह्मणों का विरोध किया। चूँकि अशोक ने पशु बलि पर प्रतिबंध लगा दिया था, इसने ब्राह्मणों की आय को रोक दिया, जो उन्हें दिए गए विभिन्न प्रकार के बलिदानों के रूप में उपहार प्राप्त करते थे।

### सेना और नौकरशाही पर भारी व्यय

मौर्य युग के दौरान सेना और नौकरशाही को बनाए रखने पर भारी खर्च किया गया था। इसके अलावा, अशोक ने अपने शासनकाल के दौरान बौद्ध भिक्षुओं को बड़ा अनुदान दिया, जिससे शाही खजाना खाली हो गया। अशोक के उत्तराधिकारी बने मौर्य राजाओं को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा।

### प्रांतों में विरोधी शासन

मगध साम्राज्य में प्रांतीय शासक अक्सर भ्रष्ट और दमनकारी थे। इससे साम्राज्य के खिलाफ लगातार विद्रोह हुए बिन्दुसार के शासनकाल के दौरान, तक्षशिला के नागरिकों ने दुष्ट नौकरशाहों के कुशासन के खिलाफ शिकायत की। यद्यपि बिन्दुसार और अशोक ने नौकरशाहों को नियंत्रित करने के लिए उपाय किए, लेकिन यह प्रांतों में उत्पीड़न की जांच करने में विफल रहा।

### उत्तर-पश्चिम सीमा की उपेक्षा

अशोक हमारी धार्मिक गतिविधियों को ले जाने में इतना व्यस्त था कि उसने मौर्य साम्राज्य के उत्तर-पश्चिम सीमा पर ध्यान दिया। यूनानियों ने इसका लाभ उठाया और उत्तरी अफगानिस्तान में एक राज्य स्थापित किया जिसे बैक्ट्रिया के नाम से जाना जाता था। इसके बाद विदेशी आक्रमण की एक श्रृंखला हुई जिसने साम्राज्य को कमजोर कर दिया।

### मौर्य युग का महत्व

मौर्य साम्राज्य की स्थापना के बाद भारतीय इतिहास में एक नया युग का आरम्भ माना जाता है। यह इतिहास में पहली बार हुआ था कि पूरा भारत राजनीतिक रूप से एकजुट था। इसके अलावा, इस अवधि में इतिहास लेखन कालक्रम और स्रोतों में सटीकता के कारण स्पष्ट हो गया। इसके साथ ही देशी और विदेशी साहित्यिक स्रोत पर्याप्त रूप में उपलब्ध थे। इस साम्राज्य ने इस अवधि के इतिहास को लिखने के लिए एक बड़ी संख्या में रिकॉर्ड छोड़ दिया। इसके अलावा, मौर्य साम्राज्य से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण पुरातात्विक निष्कर्ष पत्थर की मूर्तियां में ठेठ मौर्यकालीन कला का एक जबरदस्त उदाहरण। कुछ विद्वानों का सुझाव है कि अशोक शिलालेख पर संदेश अधिकांश अन्य शासकों से पूरी तरह से अलग था जो शक्तिशाली और मेहनती अशोक का प्रतीक है और यह भी कि वह अन्य शासकों की तुलना में अधिक विनम्र थे जिन्होंने भव्य खिताब को अपनाया था। इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं है कि राष्ट्र के नेताओं ने उन्हें एक प्रेरणादायक व्यक्ति माना है।